Toppersnotes®
Unleash the topper in you

MP-PSC

राज्य सिविल सेवा

मेन्स

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग

पेपर – 5 & 6

सामान्य हिन्दी एवं व्याकरण तथा हिन्दी निबंध एवं प्रारूप लेखन

SIERRA INNOVATIONS

सामान्य हिंदी एवं व्याकरण और हिंदी निबंध एवं प्रारूप लेखन

CONTENTS

हिन्दी

1.	संधि	1
2.	समास	24
3.	विराम चिह्न और उसके प्रयोग	39
4.	अलंकार	43
5.	तत्सम – तद्भव	50
6.	विलोम – शब्द	54
7.	पर्यायवाची	60
8.	मुहावरे	63
9.	लोकोक्ति	73
10.	वाक्य के लिए एक शब्द	86
11.	प्रशासनिक शब्दावली	92
12.	संक्षेपण	101
13.	पल्लवन या विस्तारण	111
14.	अनुवाद	113
15.	अपठित गद्यांश	129
16.	निबंध – लेखन	136
17.	प्रारूप लेखन	141
	• शासनादेश	142
	• कार्यालय आदेश	144
	• परिपत्र	145
	• अनुस्मारक/स्मरण पत्र	146
	• अर्द्ध–शासकीय पत्र	147
	• अधिसूचना	148
	• पृष्ठांकन	149
	• प्रतिवेदन	150
	• कार्यालय टिप्पणी	152
	• वर्गीकृत विज्ञापन	154
	• प्र – पत्र	155

संधि

संधि का अर्थ–मिलान

संधि की परिभाषा

- दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है वह संधि कहलाता है अर्थात् जब दो ध्वनियाँ आपस में मिलती है तो उसमें रूपान्तर आ जाता है, तब संधि कहलाती है।

  जैसे –

  प्रत्येक – प्रति + एक
  विद्यालय – विद्या + आलय
  जगदीश – जगत + ईश
  आशीर्वाद – आशीः + वाद

संधि का परिभाषा

कामता प्रसाद के अनुसार

दो निर्दिष्ट अक्षरों के पास–पास आने के कारण उनके मेल से विकार होता है, उसे संधि कहते है।

किशोरीदास वाजपेयी के अनुसार

जब दो या दो से अधिक वर्ण पास–पास आते हैं तो कभी–कभी उसमें रूपान्तर आ जाता है वह संधि कहलाती है।

संधि विच्छेद

- वर्णों के मेल से उत्पन्न ध्वनि परिवर्तन को ही संधि कहते है। परिणामस्वरूप उच्चारण एवं लेखन दोनों ही स्तरों पर अपने मूल रूप से भिन्नता आ जाती है। अतः वर्णों/ध्वनि को पुनः मूल रूप में लाना ही संधि विच्छेद कहलाता है।

  जैसे– वर्ण + मेल = संधि युक्त शब्द
  रमा + ईश = रमेश
  आ + ई = ए

- यहाँ (आ + ई) दो वर्णों के मेल से विकार स्वरूप 'ए' ध्वनि उत्पन्न हुई और संधि का जन्म हुआ। संधि विच्छेद के लिए पुनः मूल रूप में लिखना चाहिए।

  जैसे– शुभ + आगमन – शुभागमन
  सत् + आचरण – सदाचरण
  निः + ईश्वर – निरीश्वर

संधि के भेद		
स्वर संधि	**व्यंजन संधि**	**विसर्ग संधि**
(स्वर + स्वर का मेल) महा + आत्मा (आ + आ)	स्वर + व्यंजन → परि + छेद (इ + छ) व्यंजन + स्वर → दिक् + अम्बर (क् + अ) व्यंजन + व्यंजन → सत् + वाणी (त् + व्)	विसर्ग + स्वर → मनः + अविराम (ः + अ) विसर्ग + व्यंजन → तपः + वन (ः + व्)

Toppersnotes
Unleash the topper in you

1. स्वर संधि

स्वर से स्वर का जब मेल होता है तो उसमें विशेष विकार की स्थिति के उत्पन्न होनें को ही स्वर संधि कहा जाता है।

जैसे– विद्यार्थी – विद्या + अर्थी
आ + अ = आ

स्वर संधि के मुख्यतः पाँच भेद होते है–

स्वर संधि के भेद

- दीर्घ संधि
- गुण संधि
- वृद्धि संधि
- यण संधि
- अयादि संधि

(i) दीर्घ संधि

- इस संधि में दो समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते है।
- यदि अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, के बाद वे ही (अर्थात् समान) लघु या दीर्घ स्वर आ जायें तो दोनों मिलकर आ, ई, ऊ, ॠ हो जाते हैं।

(अ + अ = आ)

अ + अ = आ	(i) युग + अन्तर = युगान्तर युग् अ + अन्तर युगान्तर युग् आ न्तर युग् अ + अन्तर युग + अन्तर	(ii) स्व + अर्थ = स्वार्थ स्व् अ + अर्थ आ स्व् आ र्थ स्वार्थ
अ + आ = आ	(i) हिम + आलय = हिमालय हिम् अ + आ लय आ हिम् आ लय हिमालय	(ii) गमन + आगमन = गमनागमन गमन् अ + आगमन आ गमन् आ गमन गमना गमन
आ + अ = आ	(i) तथा + अपि = तथापि तथ् आ + अ पि आ त थ् आ पि तथापि	(ii) महा + अमात्य = महामात्य मह् आ + अमात्य आ म ह् आ मात्य महामात्य
आ + आ = आ	(i) प्रेरणा + आस्पद = प्रेरणास्पद प्रेरण् आ + आ स्पद आ प्रेरण् आ स्पद प्रेरणास्पद	(ii) चिकित्सा + आलय = चिकित्सालय चिकित्स् आ + आलय आ चिकित्स् आ लय चिकित्सालय

इ + इ = ई	(i) अति + इव = अतीव अत् + इव ई अत् + ई व अतीव	(ii) कवि + इन्द्र = कवीन्द्र क व् इ + इन्द्र ई क व् ई न्द्र कवीन्द्र
इ + ई = ई	प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा प्रत् इ + ईक्षा ई प्र त् ई क्षा प्रतीक्षा	
ई + इ = ई	मही + ईन्द्र = महीन्द्र मह् ई + ईन्द्र ई मह् ई न्द्र महीन्द्र	
ई + ई = ई	नारी + ईश्वर = नारीश्वर ना र् ई + ईश्वर नार् ई श्वर नारीश्वर	
उ + उ = ऊ	गुरू + उपदेश = गुरूपदेश गुर् उ + उपदेश ऊ गुर् + ऊ पदेश गुरूपदेश	
उ + ऊ = ऊ	लघु + ऊर्मि = लघूर्मि ल घ् उ + ऊर्मि ऊ लघ् ऊ र्मि लघूर्मि	
ऊ + ऊ = ऊ	सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि सरय् ऊ + ऊर्मि ऊ सरय् उ र्मि सरयूर्मि	

ऋ + ऋ = ॠ	पितृ + ऋण = पितृण पित् ॠ + ऋण ॠ पित् ॠ ण पितृण	

नोट – ऐसे ऋ वाली संधियो से बने दीर्घ ॠ वाले शब्द हिन्दी में प्रचलित नही है।

दीर्घ संधि के उदाहरण

अन्नाभाव	–	अन्न + अभाव	अ + अ = आ	परम + अर्थ = परमार्थ
भोजनालय	–	भोजन + आलय	अ + आ = आ	
विद्यार्थी	–	विद्या + अर्थी	आ + अ = आ	
महात्मा	–	महा + आत्मा	आ + आ = आ	
गिरीन्द्र	–	गिरि + इन्द्र	इ + इ = ई	
महीन्द्र	–	मही + इन्द्र	ई + इ = ई	
गिरीश	–	गिरि + ईश	इ + ई = ई	
रजनीश	–	रजनी + ईश	ई + ई = ई	रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
भानूदय	–	भानु + उदय	उ + उ = ऊ	मुनी + इन्द्र = मुनीन्द्र
वधूत्सव	–	वधू + उत्सव	ऊ + उ = ऊ	अभिप्सा = अभि + ईप्सा
रामावतार	–	राम + अवतार	अ + अ = आ	भय + आक्रांत = भयक्रांत
सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी	अ + अ = आ	स्नेह + आविष्ट = स्नेहाविष्ट
रामायण	–	राम + अयन	अ + अ = आ	
धर्माधर्म	–	धर्म + अधर्म	अ + अ = आ	
पराधीन	–	पर + अधीन	अ + अ = आ	
पुण्डरीकाक्ष	–	पुण्डरिक + अक्ष	अ + अ = आ	
दैत्यारि	–	दैत्य + अरि	अ + अ = आ	
शताब्दी	–	शत + अब्दी	अ + अ = आ	
धर्मार्थ	–	धर्म + अर्थ	अ + अ = आ	
मुरारि	–	मुर + अरि	अ + अ = आ	
नीलाम्बर	–	नील + अम्बर	अ + अ = आ	
परमार्थ	–	परम + अर्थ	अ + अ = आ	
रूद्राक्ष	–	रुद्र + अक्ष	अ + अ = आ	
स्वाधीन	–	स्व + अधीन	अ + अ = आ	
गीताजंली	–	गीत + अंजली	अ + अ = आ	
दीपावली	–	दीप + अवली	अ + अ = आ	
प्रार्थी	–	प्र + अर्थी	अ + अ = आ	
छिद्रन्वेषी	–	छिद्र + अन्वेषी	अ + अ = आ	
मूल्यांकन	–	मूल्य + अंकन	अ + अ = आ	

अन्त्याक्षरी	–	अंत्य + अक्षरी	अ + अ = आ	
सापेक्ष	–	स + अपेक्ष	अ + अ = आ	
अभयारण्य	–	अभय + अरण्य	अ + अ = आ	
सत्यार्थी	–	सत्य + अर्थी	अ + अ = आ	
नारायण	–	नार + अयन	अ + अ = आ	कंटक + आकीर्ण = कंटाकाकीर्ण
परमात्मा	–	परम + आत्मा	अ + आ = आ	
पदावलि	–	पद + अवलि	अ + आ = आ	
रत्नाकर	–	रत्न + आकर	अ + आ = आ	
निगमागमन	–	निगम + आगमन	अ + आ = आ	
पद्माकर	–	पद्म + आकर	अ + आ = आ	
शरणागत	–	शरण + आगत	अ + आ = आ	
सत्याग्रह	–	सत्य + आग्रह	अ + आ = आ	
विद्याध्ययन	–	विद्या + अध्ययन	आ + अ = आ	
परीक्षार्थी	–	परीक्षा + अर्थी	आ + अ = आ	
रेखांकित	–	रेखा + अंकित	आ + अ = आ	
मुक्तावली	–	मुक्ता + अवली	आ + अ = आ	
दावानल	–	दावा + अनल	आ + अ = आ	
तथापि	–	तथा + अपि	आ + अ = आ	
महाशय	–	महा + आशय	आ + आ = आ	
द्राक्षासव	–	द्राक्षा + आसव	आ + आ = आ	
विद्यालय	–	विद्या + आलय	आ + आ = आ	
महात्मा	–	महा + आत्मा	आ + आ = आ	
प्रेरणास्पद	–	प्रेरणा + आस्पद	आ + आ = आ	
कवीन्द्र	–	कवि + इन्द्र	इ + इ = ई	
अतिव	–	अति + इव	इ + इ = ई	
अभीष्ट	–	अभि + इष्ट	इ + इ = ई	
अतीत	–	अति + इत	इ + ई = ई	
महीन्द्र	–	मही + इन्द्र	ई + इ = ई	
महतीच्छा	–	महती + इच्छा	ई + इ = ई	
कपीश	–	कपि + ईश	ई + इ = ई	
प्रतीक्षा	–	प्रति + ईक्षा	ई + इ = ई	
अधीक्षण	–	अधि + इक्षण	ई + इ = ई	
अभीप्सा	–	अभि + इप्सा	ई + इ = ई	
नारीश्वर	–	नारी + ईश्वर	ई + ई = ई	प्रति + ईक्षा = प्रतीक्षा
सतीश	–	सती + ईश	ई + ई = ई	
लघूत्तम	–	लघु + उत्तम	उ + उ = ऊ	
सूक्ति	–	सु + उक्ति	उ + उ = ऊ	
अनूदित	–	अनु + उदित	उ + उ = ऊ	

गुरूपदेश	–	गुरु + उपदेश	उ + उ = ऊ	
भानूदय	–	भानु + उदय	उ + उ = ऊ	
सिंधूर्मि	–	सिंधु + ऊर्मि	उ + ऊ = ऊ	
भानूर्जा	–	भानु + ऊर्जा	उ + ऊ = ऊ	
वधूत्सव	–	वधू + उत्सव	ऊ + उ = ऊ	
चमूत्तम	–	चमू + उत्तम	ऊ + उ = ऊ	
मातृण	–	मातृ + ऋण	ऋ + ऋ = ॠ	
होतृकार	–	होतृ + ऋकार	ऋ + ऋ = ॠ	

दीर्घ संधि की पहचान

दीर्घ संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत आ, ई, ऊ की मात्राएँ (ा, ी, ू) आती है और इनका विच्छेद इन्ही मात्राओं से किया जाता है। जैसे – विद्यालय – विद्या + आलय

अपवाद

शक + अन्धु = शकन्धु
कर्क + अन्धु = कर्कन्धु
विश्व + मित्र = विश्वामित्र
मूसल + धार = मूसलाधार
मनस् + ईषा = मनीषा
युवन् + अवस्था = युवावस्था

(ii) गुण संधि

- जब अ, आ के बाद इ, ई आए तब दोनों मिलकर 'ए' हो जाते है।
  जैसे– देवेन्द्र – देव + इन्द्र (अ + इ = ए)
- अ, आ के बाद उ, ऊ आए तो दोनों मिलकर ओ हो जाते हैं।
  जैसे– वीरोचित – वीर + उचित (अ + उ = ओ)
- अ, आ के बाद ऋ, ॠ आए तो दोनों मिलकर अर् हो जाते हैं।
  जैसे–महर्षि–महा + ऋषि (आ + ऋ = अर)

गुण संधि की पहचान

गुण संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत ए, ओ की मात्राएँ (े, ो) या र् आता है (र्) और इनका विच्छेद इन्हीं मात्राओं से किया जाता है।

गुण संधि को समझाने का तरीका

अ + इ = ए	गज + इन्द्र = गजेन्द्र गज् अ + इन्द्र ए गज् ऐ न्द्र गजेन्द्र नर + इन्द्र = नरेन्द्र

	नर् अ इ न्द्र ए नर् ए न्द्र नरेन्द्र
अ + उ त्र ओ	पर + उपकार = परोपकार पर् अ + उपकार ओ पर् ओ प कार परोपकार
आ + ऊ त्र ओ	गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि गंग् आ + उर्मि ओ गंग् ओ र्मि गंगोर्मि
अ + ऋ त्र अर्	सप्त + ऋिषि त्र सप्तर्षि सप्त् अ + ऋषि अर् सप्त् अर् षि सप्तर्षि
आ + ऋ त्र अर्	वर्षा + ऋतु त्र वर्षर्तु वर्ष अ + ऋतु अर् वर्ष अर, तु वर्षर्तु

उदाहरण

गणेश	–	गण + ईश	अ + ई = ए	
यथेष्ट	–	यथा + इष्ट	आ + इ = ए	
रमेश	–	रमा + ईश	आ + ई = ए	
जलोर्मि	–	जल + ऊर्मि	अ + ऊ = ओ	
गंगोर्मी	–	गंगा + ऊर्मि	आ + ऊ = ओ	
कष्वर्षि	–	कष्व + ऋषि	अ + ऋ = अर्	
शुभेच्छा	–	शुभ + इच्छा	अ + इ = ए	
नरेश	–	नर + ईश	अ + ई = ए	
जलोष्मा	–	जल + ऊष्मा	अ + ऊ = ओ	
सप्तर्षि	–	सप्त + ऋषि	अ + ऋ = अर्	
नरेन्द्र	–	नर + इन्द्र	अ + इ = ए	
भारतेन्दु	–	भारत + इन्दु	अ + इ = ए	

मृगेन्द्र	–	मृग + इन्द्र	अ + इ = ए	
स्वेच्छा	–	स्व + इच्छा	अ + इ = ए	
देवेन्द्र	–	देव + इन्द्र		
प्रेषिती	–	प्र + ईषिती		
इतरेतर	–	इतर + इतर		
अंत्येष्टि	–	अन्त्य + इष्टि		
नृपेन्द्र	–	नृप + इन्द्र		
महेन्द्र	–	महा + इन्द्र		
अपेक्षा	–	अप + ईक्षा		
प्रेक्षक	–	प्र + ईक्षक		
राकेश	–	राका + ईश		
गुड़ाकेश	–	गुड़ाका + ईश		
सूर्योदय	–	सूर्य + उदय		
सोदाहरण	–	स + उदाहरण		
आद्योपान्त	–	आद्य + उपान्त		
प्राप्तोदक	–	प्राप्त + उदक		
जन्मोत्सव	–	जन्म + उत्सव		
अन्योक्ति	–	अन्य + उक्ति		
नीलोत्पल	–	नील + उत्पल		
परोपकार	–	पर + उपकार		
सर्वोदय	–	सर्व + उदय		
अन्त्योदय	–	अन्त्य + उदय		
महोदय	–	महा + उदय		
महोत्सव	–	महा + उत्सव		
जलोर्मि	–	जल + ऊर्मि		
जलोष्मा	–	जल + ऊष्मा		
देवर्षि	–	देव + ऋषि		
हेमन्तर्तु	–	हेमन्त + ऋतु		
शीतर्तु	–	शीत + ऋतु		
शिशिरर्तु	–	शिशिर + ऋतु		
उत्तमर्ण	–	उत्तम + ऋण		
अधमर्ण	–	अधम + ऋण		
राजर्षि	–	राज + ऋषि		
महर्ण	–	महा + ऋण		
महर्तु	–	महा + ऋतु		
तवल्कार	–	तल + लृकार		

गुण संधि से संबंधित विगत परीक्षाओं में पूछे गए महत्वपूर्ण प्रश्न

महा + उत्सव = महोत्सव

मम + इतर = ममेतर)

नव + ऊढा = नवोढा

वर्षा + ऋतु = वर्षर्तु

नोट

अपवाद

- स्वर संधि में अगर 'प्र' के बाद ऊढ़/ऊढ़ा, ऊढ़ी ऊह आ जाए तो वहाँ गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी।
  जैसे– प्रौढ़–प्र + ऊढ
  प्र + उह = प्रौह
- 'अक्ष' शब्द के बाद अगर 'ऊहिनी' शब्द आ जाए तो वहाँ भी गुण संधि न होकर वृद्धि संधि होगी।
  जैसे– अक्षौहिणी–अक्ष + ऊहिनी

(iii) वृद्धि संधि

- अ, आ के बाद ए, ऐ आनें पर दोनों मिलकर ऐ हो जाता है।
  जैसे– एकैक – एक+एक
- अ, आ के बाद ओ, औ आने पर दोनों मिलकर 'औ' हो जाता है।
  जैसे– महौषधि – महा + औषधि

अ/आ – ए/ऐ = ऐ	एक + एक = एकैक एक् अ + एक ऐ एक् ऐ क एकैक महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य मह् आ + ऐ श वर्य ऐ मह् ऐ श्वर्य महैश्वर्य
अ/आ – ओ/औ = औ	परम + औज = परमौज परम् अ + औज औ परम् औ ज परमौज महा + औषधि = महौषधि मह् आ + औषधि औ मह् औ षधि महौषधि

उदाहरण

1. परमैश्वर्य	–	परम + ऐश्वर्य	11. वसुधैव	–	वसुधा + एव
2. सदैव	–	सदा + एव	12. सदैव	–	सदा + एव
3. महैश्वर्य	–	महा + ऐश्वर्य	13. मतैक्य	–	मत + ऐक्य
4. परमौज	–	परम + ओज	14. विचारैक्य	–	विचार + ऐक्य
5. महौजस्वी	–	महा + ओजस्वी	15. गंगौक	–	गंगा + ओक
6. वनौषध	–	वन + औषध	16. महौज	–	महा + ओज
7. महौषध	–	महा + औषध	17. जलौषधि	–	जल + औषधि
8. लोकैषणा	–	लोक + एषणा	18. परमौत्सुक्य	–	परम + औत्सुक्य
9. हितैषी	–	हित + एषी	19. देवौदार्य	–	देव + औदार्य
10. तथैव	–	तथा + एव	20. विश्वैक्य	–	विश्व + ऐक्य
			21. स्वैच्छिक	–	स्व + ऐच्छिक

वित + एषणा त्र वितैषणा
परम + एन्द्रजालिक – परमैन्द्रजालिक
गंगा + ऐश्वर्य – गंगैश्वर्य
परम + औदार्य – परमौदार्य
परम + औपचारिक – परमौपचारिक
मृदा + औषधि – मृदौषधि

वृद्धि संधि की पहचान

वृद्धि संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत ऐ, औ की मात्राएं (ै, ौ) आती है और इनका विच्छेद इन्ही मात्राओं से होता है।

अपवाद

बिम्ब + ओष्ठ – बिम्बोष्ठ
अधर + ओष्ठ – अधरोष्ठ
दन्त + ओष्ठ – दतोष्ठ

वृद्धि संधि के विशेष नियम

यदि ऋण / दश / वसन / प्र / कंबल / वत्सतर के साथ ऋण शब्द का मेल हो रहा हो तो वहाँ वृद्धि एकादेश 'आर' होकर वृद्धि संधि हो जाती है।

ऋण + ऋण = ऋणार्थ (वृद्धि संधि)
दश + ऋण = दशार्ण (वृद्धि संधि)
वसन + ऋण = वसनार्ण (वृद्धि संधि)
प्र + ऋण = प्राण (वृद्धि संधि)
कम्बल + ऋण = कम्बलार्ण (वृद्धि संधि)
वत्सतर + ऋण = वत्सतरार्ण (वृद्धि संधि)

इन शब्दों के अलावा अन्य किसी शब्द के साथ ऋण शब्द का मेल होने पर 'गुण' एकादेश 'अर' होकर गुण संधि मान्य होगी।
जैसे – उत्तमर्ण = उत्तम + ऋण
महर्ण = महा + ऋण

स्वर शब्द के साथ ईर / ईरी / ईरिणी शब्दों का मेल होने पर वृद्धि एकादेश 'ए' किया जाता है व संधि होगी।
जैसे – स्व + ईर = स्वैर (वृद्धि संधि)

अ / आ स्वर के साथ 'ऋत' शब्द का मेल होने पर वृद्धि एकादेश 'आर' होकर वृद्धि संधि होगी।
पिपासा + ऋत = पिपासार्त (वृद्धि)
सुख + ऋत = सुखार्त (वृद्धि)

'परम' शब्द के साथ 'ऋत' शब्द का मेल होने पर 'गुण' एकादेश 'अर' होकर गुण संधि हो जाती है।
परम + ऋत = परमर्त (गुण संधि)

किसी भी अकारान्त उपसर्ग प्र/उप/अप/अव के साथ 'ऋ' स्वर से आरम्भ होने वाली क्रियापद (ऋच्छति) का मेल होने पर वृद्धि पर एकादेश 'आर' किया जाकर वृद्धि संधि होगी।
जैसे – प्र + ऋच्छति = प्रार्च्छति (वृद्धि संधि)
उप + ऋच्छति = उपार्च्छति (वृद्धि संधि)

अ/आ स्वर के साथ ऐहि/ओम/ओदन शब्दों का मेल होने पर केवल संयोग कार्य ए/ओ किया जाता है।
शिव + एहि = शिवेहि (संयोग)
शुक + ओदन = शुकोदन (संयोग)
शिवाय + ओम = शिवायोम (संयोग)

अ/आ स्वर के साथ ओष्ठ/ओतु शब्द का मेल होने पर विकल्प से वृद्धि एकादेश 'औ' तथा संयोग कार्य 'ओ' दोनों किए जा सकते है।
जैसे –
कण्ठ + ओष्ठ = कठौष्ठ (वृद्धि), कंठोष्ठ (संयोग)
दन्त + ओष्ठ = दन्तौष्ठ (वृद्धि), दंतोष्ठ (संयोग)

(iv) यण संधि

- यदि इ या ई, उ या ऊ, तथा ऋ के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो–
  इ, ई का य, उ, ऊ का व, ऋ का र हो जाता है, साथ ही बाद वाले शब्द के पहले स्वर की मात्रा य, व, र में लग जाती है।

उदाहरण

1. अत्यधिक	–	अति + अधिक	42. व्यास	–	वि + आस
2. इत्यादि	–	इति + आदि	43. व्याप्त	–	वि + आप्त
3. नद्यागम	–	नदी + आगम	44. न्याय	–	नि + आय
4. अत्युत्तम	–	अति + उत्तम	45. व्याकरण	–	वि + आकरण
5. अत्यूष्म	–	अति + उष्म	46. व्यायाम	–	वि + आयाम
6. प्रत्येक	–	प्रति + एक	47. व्याधि	–	वि + आधि
7. स्वच्छ	–	सु + अच्छ	48. प्रत्यारोपण	–	प्रति + आरोपण
8. स्वागत	–	सु + आगत	49. अभ्युदय	–	अभि + उदय
9. अन्वेषण	–	अनु + एषण	50. प्रत्युत्तर	–	प्रति + उत्तर
10. अन्विति	–	अनु + इति	51. उपर्युक्त	–	उपरि + उक्त
11. पित्राज्ञा	–	पितृ + आज्ञा	52. प्रत्युपकार	–	प्रति + उपकार
12. अत्यल्प	–	अति + अल्प	53. न्यून	–	नि + ऊन
13. व्यसन	–	वि + असन	54. अत्यैश्वर्य	–	अति + ऐश्वर्य
14. अध्यक्ष	–	अधि + अक्ष	55. देव्यपर्ण	–	देवी + अर्पण
15. पर्यंक	–	परि + अंक	56. नद्यपर्ण	–	नदी + अर्पण
16. अभ्यर्थी	–	अभि + अर्थी	57. देव्यागमन	–	देवी + आगमन
17. अभ्यंतर	–	अभि + अंतर	58. नार्युचित	–	नारी + उचित
18. व्यय	–	वि + अय	59. स्त्र्युचित	–	स्त्री + उचित

19. पर्यवेक्षक – परि + अवेक्षक	60. स्त्र्युपयोगी – स्त्री + उपयोगी
20. व्यर्थ – वि + अर्थ	61. नद्यूर्मि – नदी + ऊर्मि
21. अत्यन्त – अति + अन्त	62. अत्यौचित्य – अति + औचित्य
22. प्रत्यक्ष – प्रति + अक्ष	63. स्वल्प – सु + अल्प
23. रीव्यनुसार – रीति + अनुसार	64. मन्वन्तर – मनु + अन्तर
24. व्यवहार – वि + अवहार	65. स्वच्छ – सु + अच्छ
25. न्यसत – नि + अस्त	66. मध्वरि – मधु + अरि
26. अध्ययन – अधि + अयन	67. तन्वंगी – तनु + अंगि
27. प्रत्यय – प्रति + अय	68. स्वस्ति – सु + अस्ति
28. गत्यवरोध – गति + अवरोध	69. गुर्वादेश – गुरु + आदेश
29. गत्यनुसार – गति + अनुसार	70. गुर्वाज्ञा – गुरु + आज्ञा
30. व्यष्टि – वि + अष्टि	71. वध्वागमन – वधू + आगमन
31. प्रत्यर्पण – प्रति + अर्पण	72. अन्विति – अनु + इति
32. अभ्यागत – अभि + आगत	73. अन्वीक्षण – अनु + ईक्षण
33. प्रत्याशा – प्रति + आशा	74. अन्वीक्षा – अनु + ईक्षा
34. अत्याचार – अति + आचार	75. गुर्वैदार्य – गुरु + औदार्य
35. व्याकुल – वि + आकुल	76. पित्रनुमति – पितृ + अनुमति
36. अभ्यास – अभि + आस	77. मात्राज्ञा – मातृ + आज्ञा
37. अत्यावश्यक – अति + आवश्यक	78. पित्रादेश – पितृ + आदेश
38. व्यापक – वि + आपक	79. वक्त्रुद्बोधन – वक्तृ + उद्बोधन
39. पर्याप्त – परि + आप्त	80. लाकृति – लृ + आकृति
40. पर्यावरण – परि + आवरण	81. सुध्युपास्य – सुधी + उपास्य
41. अध्यादेश – अधि + आदेश	82. त्र्यम्बकम – त्रि + अम्बकम
	83. स्वस्त्ययन – स्वस्ति + अयन

Toppersnotes
Unleash the topper in you

यण संधि की पहचान

यण संधि युक्त शब्दों में अधिकांशत य, व, र से पहले आधा वर्ण आता है और इनका विच्छेद इन्ही वर्णो से किया जाता है।

शब्द में आधा अक्षर + य, व, र, लिखा हुआ है तो –
आधे अक्षर को पूरा लिख दो
य, व, र के अनुसार मात्रा लगा दो
य हो तो इ/ई की मात्रा
व हो तो उ/ऊ की मात्रा
र हो तो ऋ की मात्रा

य, व, र को छोड़कर शेष, शब्दांश + के आगे लिख दो।

अधि + अधिन = अध्यधीन
देवी + ऐश्वर्य = देव्यैश्वर्य

Toppersnotes
Unleash the topper in you

नोट – यदि किसी शब्द के आरम्भ मे 'स्व' शब्दांश लिखा हुआ है एवम उसका अर्थ अपना/अपनी/अपने प्रकट हो रहा है तो वहाँ संधि विच्छेद करते समय 'स्व' शब्दांश को + से पहले लिखना चाहिए एवं + के बाद यण संधि के अलावा अन्य संधि नियमों के अनुसार शब्द लिखना चाहिए।

स्व + अर्थी = स्वार्थी (दीर्घ संधि)

स्व + अवलम्बन = स्वावलम्बन (यण संधि)

स्व + इच्छा = स्वेच्छा (गुण संधि)

स्वः + ग = स्वर्ग (विसर्ग संधि)

सत्य + आग्रह = सत्याग्रह (दीर्घ संधि)

(v) अयादि संधि

- यदि 'ए' या 'ऐ' 'ओ' या 'औ' के बाद कोई भिन्न स्वर आए तो 'ए' का अय्, ऐ का आय् हो जाता है।
  जैसे– नयन – ने + अन
  नायक – नै + अक
- ओ का अव, औ का आव हो जाता है।
  जैसे– पवन–पो + अन
  पावक–पौ + अक

ए	ओ	ऐ	औ
↓	↓	↓	↓
अय्	अव्	आय्	आव् हो जाता है।

ऐ – अय	**ऐ – आय**
ने + अन त्र नयन न् ए + अन ↓ अय् न् अय् अ न नयन	गै + इका त्र गायिका ग् ऐ + इका ↓ आय ग् आय् इका गायिका
ओ – अव्	**औ – आव**
हो + अन – हवन ह् ओ + अन ↓ अव् ह् अव् अन हवन	पौ + अन त्र पावन प् औ + अन ↓ आव् प् आव् अन पावन

उदाहरण

1. भवन	–	भो + अन	21. अय	–	ए + आ
2. संचय	–	संचे + अ	22. चयन	–	चे + अन
3. शयन	–	शे + अन	23. नयन	–	ने + अन
4. नय	–	ने + अ	24. गायन	–	गै + अन
5. विजयिनी	–	विजे + इनी	25. शायक	–	शै + अक
6. विनायक	–	विनै + अक	26. भवति	–	भो + अति
7. विधायिका	–	विद्यै + इका			

8. पायक	–	पै + अक	27. भाव	–	भौ + अ
9. गायक	–	गै + अक	28. आवि	–	औ + अ
10. विधायक	–	विधै + अक	29. भावुक	–	भौ + उक
11. सायक	–	सै + अक	30. शाविक	–	शौ + इक
12. हवन	–	हो + अन	31. दायिनी	–	दै + इनी
13. गवीश	–	गो + ईश	32. द्वावेव	–	द्वौ + एव
14. श्रवण	–	श्रो + अन			
15. विभव	–	विभो + अ			
16. भविष्य	–	भो + इष्य			
17. पवित्र	–	पो + इत्र			
18. वटवृक्ष	–	वटो + वृक्ष			
19. श्रावक	–	श्रौ + अक			
20. धाविका	–	धौ + इका			

नोट – कुछ शब्द ऐसे होते है जिसमें एक से अधिक संधि भी होती है।
गवेन्द्र– गो + इन्द्र – अयादि
गव + इन्द्र – गुण
गवाक्ष – गो + अक्ष – अयादि
गव + अक्ष – गुण

अपवाद

पो + इत्र = पवित्र (अयादि) → अव् – ओ का नियम

पू + इत्र = पवित्र (यण) → ऊ + ई = वि का नियम

कुछ इतिहासकारों नें स्वर संधि के अन्य रूपों को भी स्वीकार किया है जो निम्न है–

पररूप संधि

यदि किसी शब्द के अन्त में अ, आ के बाद ए, ओ में से कोई एक वर्ण हो तो पदान्त अ, आ का पररूप एका देश हो जाता है।
जैसे –
दन्तोष्ठ – दन्त + ओष्ठ
शुद्धोदन – शुद्ध + ओदन
अधरोष्ठ – अधर + ओष्ठ
बिम्बोष्ठ – बिम्ब + ओष्ठ

पूर्व रूप

यदि पद के अन्त में ए, ओ के बाद ह्स्व 'अ' हो तो अ का पूर्व एकादेश हो जायेगा तथा विकल्प से 'अ' के लुप्त पद स्थान पर अवग्रह 'अ' (ऽ) हो जायेगा।
जैसे –
मनोऽभिलाषा/मनोभिलाषा – मनो + अभिलाषा
यशोऽधिकार/यशोधिकार – यशो + अधिकार
मनोऽभिमान/मनोभिमान – मनो + अभिमान
सोऽपि/सोपि – सो + अपि

स्वर संधि के विशेष नियम

- यदि पदान्त अ के परे अ हो तो विकल्प से अ + अ = अ हो जाता है।

जैसे –

पतंजलि	–	पतत् + अंजलि
कुलटा	–	कुल + अटा
अपंग	–	अप + अंग
सारंग	–	सार + अंग
सीमत	–	सीम + अन्त
मार्तण्ड	–	मार्त + अंड
कर्कन्धु	–	कर्क + अंधु
मनीषा	–	मनस् + ईषा

- जिन शब्दों के अन्त में अक्ष व रात्र पद लिखा हो तो संधि विच्छेद करते समय अक्ष का अक्षि, रात्र का रात्रि हो जाता है।

जैसे –

प्रत्यक्ष	–	प्रति + अक्षि
सहस्त्राक्ष	–	सहस्त्र + अक्षि
नवरात्र	–	नव + रात्रि

2. व्यंजन संधि

व्यंजन संधि में एक व्यंजन का किसी दूसरे व्यंजन से अथवा स्वर से मेल होने पर दोनों मिलने वाली ध्वनियों में विकार उत्पन्न हो जाता है। इस विकार से होने वाली संधि को व्यंजन संधि कहते है।

जैसे – व्यंजन + व्यंजन – व्यंजन
व्यंजन + स्वर – व्यंजन
स्वर + व्यंजन – व्यंजन

व्यंजन संधि के प्रमुख नियम निम्नलिखित है–

नियम – 01

- यदि प्रत्येक वर्ग के पहले वर्ण अर्थात् क, च, ट, त, प के बाद किसी वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण आए या य, र, ल, व या कोई स्वर आए तो क, च, ट, त, प के स्थान पर अपने ही वर्ग का तीसरा वर्ण अर्थात् ग, ज, ड, द, ब हो जाता है।
- (क् च् ट् त् प्) + (ग, घ, ज, झ, ड, ढ, द, ध, ब, भ, य, व, र, ल) + स्वर
 ↓ ↓ ↓ ↓ ↓
 ग् ज् ड् द् ब्

जैसे

वागीश	–	वाक् + ईश		उद्घोष	–	उत् + घोष
दिग्गज	–	दिक् + गज		सुबन्त	–	सुप् + अन्त
वाग्दान	–	वाक् + दान		वागीश्वरी	–	वाक् + ईश्वरी
सद्वाणी	–	सत् + वाणी		चिदानन्द	–	चित् + आन्नद
अजंत	–	अच् + अन्त		सदाचार	–	सत् + आचार
अबिंधन	–	अप् + इंधन		षड्दर्शन	–	षट् + दर्शन
तद्रूप	–	तत् + रूप		वाग्दत्ता	–	वाक् + दत्ता
जगदानन्द	–	जगत् + आन्नद		दिगम्बर	–	दिक् + अम्बर

शब्द	–	शप् + द		सद्वाणी	–	सत् + वाणी
जगदीश	–	जगत् + ईश		उद्दंड	–	उत् + दंड
अब्ज	–	अप् + ज		उद्धृत	–	उत् + धृत
प्रागैतिहासिक	–	प्राक् + ऐतिहासिक		सदानन्द	–	सत् + आन्नद
वाग्जाल	–	वाक् + जाल		जगदम्बा	–	जगत् + अम्बा
सद्गति	–	सत् + गति		वाग्हरि/वाग्धरी	–	वाक् + हरि
दिग्विजय	–	दिक् + विजय		वृहदारण्यक	–	वृहत् + आरण्यक
षडानन	–	षट् + आनन		सदुपयोग	–	सत् + उपयोग
ऋगवेद	–	ऋक् + वेद		सच्चिदानन्द	–	सत् + चित् + आन्नद सच्चित् + आन्नद

पश्चात् + वर्ती = पश्चादवर्ती
सत् + धर्म = सद्धर्म
महत + इच्छा = महदिच्छा
सत् + व्यवहार = सद्व्यवहार
सत् + विचार = सद्विचार
अप् + धि = अब्धि

यदि पद के अन्त में स्, त, थ, द, ध, न के बाद श्, च, छ, ज, झ, ञ में कोई वर्ण हो तो पद के अन्त में आए स्, त, थ, द, ध, न के स्थान पर क्रमशः श्, च, छ, ज, झ, ञ हो जायेगा।

- त्, थ्, द्, ध्, न्, स्
  ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓ का नियम
  च् छ् ज् झ् ञ् श्

  जैसे –

  रामश्शेते – रामस् + शेते
  सच्चित – सत् + चित
  शरच्चन्द्र – शरत् + चन्द्र
  सच्चरित्र – सत् + चरित्र

नोट – कुछ उदाहरण ऐसे होते है जो उपर्युक्त दोनों नियमों से भी बनते हैं जो निम्न है –

उज्ज्वल – उत् + ज्वल
विप्पदजाल – विपत्/विपद् + जाल
जगज्जननी – जगत् + जननी
यावज्जीवन – यावत् + जीवन
उच्चारण – उत् + चारण
महच्छत्र – महत् + छत्र
सज्जन – सत् + जन
सद् + जन

- पद के अन्त में त् के बाद न् होने पर त् के स्थान पर न् हो जाता है।

  जैसे –

  जगन्नाथ – जगत् + नाथ   श्रीमद् + नारायण – श्री मन्नारायण
  उन्नयन – उत् + नयन   जगत् + निवास – जगन्निवास
  उन्नति – उत् + नति